

आचार्य नन्दिकेश्वर का एक दुर्लभ ग्रंथ – भरतार्णव

डॉ० यास्मीन सिंह

कथक नृत्यांगना, भोपाल (म.प्र.)

कला और इसके प्रयोग की दृष्टि से भारतवर्ष का अतीत जितना समृद्ध रहा है, उतना ही सैद्धान्तिक दृष्टि से भी यह सम्पन्न है। भारतीय कला के इतिहास का प्रारंभ वैसे वेदों से माना गया है, क्योंकि वेदों में कला के विविध प्रकार और उनके प्रयोग का उल्लेख प्राप्त होता है। इसलिए विद्वानों ने वेदों को प्रामाणिक स्रोत के रूप में स्वीकार किया। दूसरी ओर, भौतिक रूप से प्रागैतिहासिक काल के भग्नावशेषों और उत्खनन से ऐसे अन्य प्रमाण स्वरूप तथ्य प्राप्त हुए हैं, जिनसे भारतीय कलाओं की प्राचीनता और समृद्धता सिद्ध होती है। रामायण, महाभारत जैसे प्राचीन धर्म ग्रंथों में विभिन्न कलाओं के लौकिक स्वरूप का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। साथ ही यह भी स्पष्ट हो जाता है, कि तत्कालीन भारतीय समाज का प्रत्येक वर्ग किसी-न-किसी माध्यम से कला के किसी-न-किसी स्वरूप से जुड़ा हुआ था। कालान्तर में अष्टादश पुराणों में भी स्थान-स्थान पर कला संबंधी विवेचन इसके दैवीय और लौकिक स्वरूपों को दिग्दर्शित करता है।

भारत में कला के विकास की एक नई धारा 'नाट्यशास्त्र' से प्रारंभ मानी गई है। इससे पूर्व कलाओं का प्रयोग तो होता था, किन्तु इसका कोई सैद्धान्तिक आधार निश्चित नहीं था और न ही लिखित रूप में प्राप्त होता है। गायन और वादन के तकनीकी पक्ष से संबंधित शब्दावलियाँ अवश्य ही प्राप्त होती हैं, परन्तु नृत्य का प्रायोगिक पक्ष ही प्राचीन धर्म ग्रंथों में विशेष उद्देश्य सहित प्राप्त होता है। दैवीय आराधना और लोकानुरंजन की भावना से अनुप्राणित नृत्य संबंधी अनेक उदाहरण ग्रंथों में वर्णित हैं। नाट्यशास्त्र की रचना के पश्चात् कलाओं के सैद्धान्तिक पक्ष को आधार प्राप्त हुआ। भारत के सभी विद्वानों के साथ-साथ पाश्चात्य विद्वानों ने भी नाट्यशास्त्र की प्राचीनता और कला की दृष्टि से इसके महत्त्व को स्वीकार किया है। भरत द्वारा रचित नाट्यशास्त्र की रचना के उपरान्त परवर्ती काल में अनेक नाट्य विषयक ग्रंथों की रचना हुई, जिससे कला-साहित्य के क्षेत्र में भारतीय नाट्य परम्परा का विकास के रूप में स्वीकृति प्राप्त हुई। चूँकि परवर्ती नाट्याचार्य प्रमुख रूप से भरत द्वारा रचित नाट्यशास्त्र से सैद्धान्तिक और प्रायोगिक तथ्यों के आधार पर प्रभावित थे, इसलिए प्रबुद्ध विद्वान वर्ग ने इसे 'नाट्यशास्त्रीय परम्परा' के रूप में स्वीकार किया। इस परम्परा में वैसे तो अनेक ग्रंथ लिखे गए, जिनमें से कुछ प्राप्त होते हैं और बहुत से ग्रंथ या तो काल के गर्भ में समा गये अथवा विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा नष्ट कर दिए गए। नाट्य-परम्परा के जो ग्रंथ वर्तमान में प्राप्त होते हैं, यद्यपि उनकी सूची भी पर्याप्त विस्तृत है तथापि उनमें से कुछ ग्रंथों को ही विशेष प्रसिद्धि प्राप्त हो सकी। इन ग्रंथों में नाट्यशास्त्र तो सर्वोच्च स्थान पर है, इसके पश्चात् आचार्य नन्दिकेश्वर द्वारा रचित अभिनयदर्पण, आचार्य धनंजय का दशरूपक आदि विशेष स्थान रखते हैं। नाट्यशास्त्र के प्रभाव और प्रभुत्व का आंकलन इसी बात से लगाया जा सकता है, कि न केवल नाट्य परम्परा के आचार्य, अपितु काव्य परम्परा और संगीत शास्त्र के आचार्य भी स्वयं को इसके प्रभाव से पृथक् न कर सके। 13वीं शताब्दी में आचार्य शारंगदेव द्वारा लिखा गया 'संगीतरत्नाकर' ग्रंथ इस बात का स्पष्ट प्रमाण है, जिसमें गायन, वादन के साथ-साथ नृत्य को विशेष रूप से सम्मिलित किया गया है और इस ग्रंथ का 'नर्तनाध्याय' शेष छः अध्यायों से अधिक विस्तृत है।

भारतीय नाट्य परम्परा में भरत के पश्चात् आचार्य नन्दिकेश्वर को विशिष्ट स्थान प्राप्त है। नन्दिकेश्वर भारतीय नाट्य परम्परा के प्रमुख आचार्यों में से एक हैं तथा भरत मुनि के पश्चात् प्राचीन आचार्यों में नन्दिकेश्वर को नाट्यकर्त्ताओं ने सम्मानित स्थान दिया है। जहाँ एक ओर आचार्य नन्दिकेश्वर द्वारा रचित ग्रंथ 'अभिनयदर्पण' भारतीय शास्त्रीय नृत्य की विभिन्न शैलियों का आधार ग्रंथ माना जाता है, वहीं दूसरी ओर इतिहासकारों का अनुमान है कि नन्दिकेश्वर ने कुछ अन्य ग्रंथों की भी रचना की है, जो वर्तमान में प्राप्त नहीं हैं। परन्तु नन्दिकेश्वर का एक अन्य ग्रंथ 'भरतार्णव' अवश्य प्राप्त होता है, जो भारतीय नृत्य की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण जान पड़ता है। इस ग्रंथ की जानकारी वरिष्ठ शिक्षाविदों, इतिहासकारों और विद्वानों को थी, परन्तु शास्त्रीय नृत्यों से सम्बद्ध अनेकानेक विद्वान, कलाकार, शोधार्थियों के लिए यह ग्रंथ अब भी दुर्लभ ही है। अतः इस शोध-पत्र के माध्यम से आचार्य नन्दिकेश्वर द्वारा रचित भरतार्णव ग्रंथ का अध्ययन किया जा रहा है, जो निश्चित रूप से शास्त्रीय नृत्य से सम्बद्ध विद्यार्थियों और शोधार्थियों के लिए लाभदायक सिद्ध होगा।

आचार्य नन्दिकेश्वर का समय-काल

आचार्य नन्दिकेश्वर भारतीय नाट्य परम्परा के प्रमुख आचार्य रहे हैं तथापि उनके समय-काल के विषय में विद्वानों में मत-मतान्तर है। इतना अवश्य है कि परवर्ती आचार्य वर्ग ने नन्दिकेश्वर द्वारा स्थापित संगीत, नाट्य व नृत्य संबंधी संकल्पनाओं को अपने-अपने ग्रंथों में यथोचित स्थान भी दिया है। डॉ. पारसनाथ

द्विवेदी ने उल्लेख किया है, कि— “आचार्य नन्दिकेश्वर का नामोल्लेख कर उनका निर्देश करने वाले संगीतरत्नाकर के रचयिता शारंगदेव हैं। उन्होंने केवल नन्दिकेश्वर के मत का उल्लेख ही नहीं किया है, बल्कि उन्हें एक संगीतशास्त्र के आचार्य के रूप में भी उल्लिखित किया है।”¹

आधुनिक विद्वानों में महत्त्वपूर्ण स्थान रखने वाले विद्वान डॉ. एम.एम. घोष ने अभिनयदर्पण का अनुवाद करने के साथ-साथ आचार्य नन्दिकेश्वर के विषय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का उद्घाटन भी किया है। घोष ने नन्दिकेश्वर का नाम संगीत शास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य मतंग के ग्रंथ ‘बृहदेशी’ में उल्लिखित होने की बात कही है—

“नन्दिकेश्वरेणाप्युक्तं—

द्वादशस्वरसम्पन्ना ज्ञातव्या मूर्च्छना बुधैः।

जातिभाषादिसिद्ध्यर्थं तारमन्द्रादिसिद्ध्यर्थे।”²

यहाँ मतंग मुनि ने बारह स्वर, मूर्च्छना, जाति, भाषा आदि के साथ-साथ तार, मन्द्रादि स्वर भेदों के संबंध में आचार्य नन्दिकेश्वर का मत प्रस्तुत किया है। इससे दो बातें सिद्ध होती हैं। पहली यह है कि नन्दिकेश्वर का समय मतंग मुनि से पूर्व का था दूसरी बात यह कि नाट्य परम्परा के साथ-साथ नन्दिकेश्वर संगीत-शास्त्र परम्परा के भी आचार्य थे। इस आधार पर नन्दिकेश्वर को आचार्य मतंग का पूर्ववर्ती आचार्य मान लेना उचित होगा। आचार्य मतंग का समय—काल लगभग 5वीं शती ई. निश्चित किया गया है, इस आधार पर घोष ने नन्दिकेश्वर का समय—काल 4थी शताब्दी ई. स्वीकार करने की बात कही है।

नन्दिकेश्वर के विषय में एक अन्य प्रचलित धारणा यह भी है, कि नन्दिकेश्वर भगवान शिव के प्रमुख गण ‘तण्डु’ ही हैं, जिनसे भरत ने तण्डव नृत्य की शिक्षा प्राप्त की। इस दृष्टि से नन्दिकेश्वर आचार्य भरत के पूर्ववर्ती अथवा समकालीन होना चाहिए। परन्तु भरत द्वारा रचित नाट्यशास्त्र अभिनयदर्पण से पूर्व लिखा जा चुका था, जिसमें नन्दिकेश्वर ने आचार्य भरत का नाम पूर्वाचार्य के रूप में उल्लिखित किया है—

“नाट्यवेदं ददौ पूर्व भरताय चतुर्मुखः।

ततश्च भरतः सार्धं गन्धर्वाप्सरसां गणैः।।2।।

नाट्यं नृत्तं तथा नृत्यमग्रे शम्भोः प्रयुक्तवान्।

प्रयोगमुद्धतं स्मृत्वा स्वप्रयुक्तं ततो हरः।।3।।

तण्डुना स्वगणाग्रण्या भरताय न्यदीदिशत्।

लास्यमस्याग्रतः प्रीत्या पार्वत्या समदीदिशत्।।4।।”³

अर्थात् पितामह ब्रह्मा ने नाट्यवेद का निर्माण कर सर्वप्रथम उसे आचार्य भरत को प्रदान किया। आचार्य भरत द्वारा प्रस्तुत अभिनय के उद्धृत प्रयोगों को देखकर भगवान शंकर ने अपने मुख्यगण तण्डु (नन्दिकेश्वर) द्वारा भरत को विधिवत् शिक्षा दिलवायी। भरत के प्रति स्नेहावश भगवती पार्वती ने लास्य नामक नृत्त में उनको दीक्षित किया।

इसके विपरीत नाट्यशास्त्र में भी नन्दिकेश्वर का नामोल्लेख प्राप्त होता है। भरत ने ‘मण्डल निर्माण विधि’ में भिन्न-भिन्न दिशाओं में भिन्न देवी-देवताओं को आसनस्थ करने का निर्देश देते समय उत्तर-पूर्व दिशा में विभिन्न देवताओं के साथ-साथ नन्दी की स्थापना का उल्लेख किया है—

“तथैवोत्तरपूर्वायां नन्दिनं च गणेश्वरान्।”⁴

नन्दीकेश्वर नामक देवता का प्रचलन था, जो भगवान शिव के प्रमुख गण थे। इस बात पर अब भी संशय है कि शिवगण नन्दिकेश्वर और अभिनयदर्पणादि ग्रंथों के रचनाकार एक ही हैं अथवा भिन्न-भिन्न हैं। दूसरी ओर नाट्यशास्त्र और अभिनयदर्पण में आंगिक विन्यास में कुछ तत्वों की समानता के कारण संशय की स्थिति निर्मित होती है। वस्तुतः उक्त तथ्यों के आधार पर आचार्य नन्दिकेश्वर का समय व काल निर्धारित करना कठिन है तथापि डॉ. घोष के अनुसार आचार्य नन्दिकेश्वर दक्षिण निवासी रहे होंगे। इस बात का उल्लेख अभिनयदर्पण एवं भरतार्णव इन दोनों ग्रंथों के अनुवादक व प्रसिद्ध इतिहासकार वाचस्पति गैरोला ने भी किया है। भरतार्णव के अनुवादित संस्करण की भूमिका में श्री गैरोला ने संभावना व्यक्त की है, कि— ‘नन्दिकेश्वर के ग्रन्थ ‘भरतार्णव’ का अवलोकन करने से यह विश्वास होता है कि वे अनेक विषयों के ज्ञाता थे। नाट्य, संगीत और रस विषयों पर उनकी रचनायें परवर्ती साहित्य में पर्याप्त लोकप्रिय हो गयी थीं। उन्हें कामशास्त्र का भी ज्ञाता बताया गया है। “भरतार्णव” की नाट्य-विधाओं का लोक-प्रचलन दक्षिण भारत में विद्यमान होने के कारण और उनके नाम से उपलब्ध होने वाली रचनाओं, विशेष रूप से ‘भरतार्णव’ और ‘अभिनयदर्पण’ की हस्तलिखित प्रतियाँ, दक्षिण भारत में ही उपलब्ध होने के कारण ही, अन्तःसाक्षियों के अभाव में भी यह सर्वथा संभव प्रतीत होता है कि वे दक्षिणात्य थे।”⁵

नन्दिकेश्वर के स्थितिकाल के सम्बन्ध में भी मतैक्य नहीं है। संगीताचार्य मतंग द्वारा नन्दिकेश्वर का उल्लेख किए जाने के कारण कुछ विद्वानों का मत है कि मतंग का समय 5वीं शती ई. था, अतः नन्दिकेश्वर

का स्थितिकाल उससे पूर्व का होना चाहिये। इस संभावना को अतर्क्य नहीं कहा जा सकता है। नन्दिकेश्वर के स्थितिकाल की उत्तर सीमा को निर्धारित करने में अधिक कठिनाई प्रतीत नहीं होती। संगीताचार्य शार्ङ्गदेव ने अपने 'संगीतरत्नाकर' में नन्दिकेश्वर के नाम का स्पष्ट उल्लेख किया है, अपितु 'अभिनयदर्पण' और 'संगीतरत्नाकर' के कतिपय स्थलों में भी एकता है। 'संगीतरत्नाकर' की रचना 1247 ई. में हुई। अतः नन्दिकेश्वर का समय उससे पूर्व होना चाहिये। नन्दिकेश्वर के उपलब्ध ग्रन्थों के आधार पर उनके स्थितिकाल के सम्बन्ध में कोई उल्लेख नहीं मिलता। उक्त साक्ष्य के आधार पर इतना अवश्य कहा जा सकता है कि 13वीं शती ई. के पूर्वार्द्ध तक उनकी रचनायें लोकप्रिय हो गयीं थी।

विद्वानों ने आचार्य नन्दिकेश्वर को विविध विषयों में पारंगत बताया है तथा उनके द्वारा अनेक ग्रंथ लिखे जाने की संभावना भी व्यक्त की है। परन्तु वर्तमान में उनके दो ही ग्रंथ प्राप्त होते हैं— अभिनयदर्पण और भरतार्णव। इन दोनों ग्रंथों में से भी अभिनयदर्पण को अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई, किन्तु भरतार्णव अभिनयदर्पण से विस्तृत होने के बाद भी किन्हीं करणों से शोध की प्रक्रिया से अधिकांशतः दूर ही रहा और प्रचलित न हो सका।

भरतार्णव का वर्णन—विषय

अभिनयदर्पण के आधार पर तुलनात्मक रूप से आचार्य नन्दिकेश्वर द्वारा रचित भरतार्णव ग्रंथ प्रथम दृष्ट्या पूर्ण प्रतीत होता है, क्योंकि ग्रंथ में नृत्य हेतु आवश्यक आंगिक अभिनय का विस्तार पूर्वक वर्णन है। भरतार्णव ग्रंथ में वर्णित आंगिक अभिनय संबंधी विवेचन 'अभिनयदर्पण' से कहीं अधिक विशाल एवं विस्तृत है। ग्रंथ में कुल पन्द्रह अध्याय हैं तथा अन्त में 'अनुबंध' नामक एक परिच्छेद प्राप्त होता है।

ग्रंथ का प्रथम अध्याय में 27 असंयुत हस्त मुद्रायें विनियोग सहित दी गई हैं। तदनन्तर चतुर्थ अध्याय में आचार्य बृहस्पति के मत से 27 असंयुत हस्त मुद्राओं का पुनः विनियोग दिया गया है, जिन्हें निम्नांकित तालिका के माध्यम से दर्शाया गया है—

भरतार्णव (असंयुत हस्त)					
क्र.	नन्दिकेश्वर	बृहस्पति	क्र.	नन्दिकेश्वर	बृहस्पति
1	पताक	पताक	15	बाण	सर्पचतुर
2	त्रिपताक	त्रिपताक	16	सर्पशीर्ष	चलसर्प
3	अर्धपताक	कर्तरीमुख	17	मृगशीर्ष	मृगशीर्ष
4	कर्तरीमुख	अर्धचन्द्र	18	सिंहमुख	सिंहमुख
5	मयूर	अराल	19	कांगुल	कांगुल
6	अर्धचन्द्र	शुकतुण्ड	20	अल्पल्लव	अलपंग
7	अराल	मुष्टि	21	चतुर	चतुर
8	शुकतुण्ड	शिखर	22	भ्रमर	खण्डचतुर
9	मुष्टि	कपित्थ	23	हंसार्य	हंसार्य
10	शिखर	खटकामुख	24	हंसपक्ष	हंसपक्ष
11	कपित्थ	सूची	25	संदंश	संदंश
12	खटकामुख	पद्मकोश	26	मुकुल	मुकुल
13	सूची	बाण	27	ताम्रचूड़	ताम्रचूड़
14	पद्मकोश	सर्पशीर्ष			

तालिका में बृहस्पति द्वारा बताये गए असंयुत हस्त मुद्राओं में अर्धपताक, मयूर और भ्रमर इन तीन हस्तों के स्थान पर सर्पचतुर, चलसर्प और खण्डचतुर इन तीन नवीन हस्त मुद्राओं का उल्लेख किया गया है। नन्दिकेश्वर द्वारा रचित अभिनयदर्पण में भी 28 असंयुत हस्तमुद्राएँ वर्णित हैं, जिनमें 'चन्द्रकला' और 'त्रिशूल' भरतार्णव में प्राप्त नहीं होते। जबकि 'बाण हस्त' नामक हस्त मुद्रा अभिनयदर्पण में अप्राप्त है।

भरतार्णव ग्रंथ के द्वितीय अध्याय में 16 संयुत हस्त मुद्राओं का विनियोग सहित वर्णन प्राप्त होता है—

भरतार्णव (संयुत हस्त)							
1	पुष्पपुट	5	कर्तरीस्वस्तिक	9	पताकस्वस्तिक	13	उत्संग
2	अंजलि	6	डोला	10	उत्तानवंचित	14	तिलक
3	चतुस्र	7	अवहित्थ	11	कलश	15	नागबंध
4	त्रिपताकस्वस्तिक	8	वर्धमान	12	पक्षवंचित	16	वैष्णव

तालिका में दी गई हस्तमुद्राओं में से त्रिपताक, कर्तरी, पताक असंयुत हैं, जिन्हें संयुत रूप से अर्थात् दोनों से समान मुद्रा बनाकर विनियोग बताया गया है। अभिनयदर्पण में 23 संयुत हस्त मुद्रायें वर्णित हैं, जिनमें से पुष्पपुट, अंजलि, कर्तरीस्वस्तिक, डोला और उत्संग ये हस्त मुद्रायें समान रूप से भरतार्णव में भी प्राप्त होती हैं, जबकि शेष 11 मुद्रायें सवर्था भिन्न हैं।

भरतार्णव ग्रंथ के तृतीय अध्याय में 22 नृत्त हस्तों का लक्षण व विनियोग बताया गया है, जबकि अभिनयदर्पण में मात्र 13 नृत्त हस्त ही बताये गए हैं, जो कि भरतार्णव में बताये गये 22 नृत्त हस्तों से सर्वथा भिन्न हैं। इसी क्रम में भरतार्णव के चतुर्थ अध्याय में 19 शिरोभेद, 36 दृष्टि भेद (8 रस दृष्टि, 8 स्थायीभाव दृष्टि, 20 व्याभिचारीदृष्टि), 33 पाद भेद (7 मुख्य पादभेद, 22 अन्य पादभेद, मतान्तर से 5 पादभेद) बताये गये हैं। पंचम अध्याय में 32 स्थानक, षष्ठम् अध्याय में स्थानकों के 32 प्रयोग एवं स्थानकों में हस्तों के 17 प्रयोग, सप्तम अध्याय में ताल प्रकरण, अष्टम् अध्याय में चारी लक्षण (आकाशचारी 9, भौमिचारी 16), नवम अध्याय में 24 अंगहार, दशम अध्याय में विभिन्न अर्थों के प्रतिपादन हेतु हस्त मुद्राओं के 21 भेद, एकादश अध्याय में शृंगनाट्य (ताण्डव) की नौ विधियाँ, द्वादश अध्याय में शृंगनाट्य के रहस्य, त्रयोदश अध्याय में सप्त लास्य प्रकरण, चतुर्दशोऽध्याय में गति, करण, चारी, ताल शब्द एवं पंचदशोऽध्याय में पुष्पांजली के 10 प्रकारों का निरूपण किया गया है। सूक्ष्मता से दृष्टिपात करें तो भरतार्णव ग्रंथ में आंगिक अभिनय का विस्तार पूर्वक वर्णन प्राप्त होता है। अभिनयदर्पण एवं भरतार्णव ग्रंथ में सर्वप्रथम समानता यह है कि ये दोनों ही ग्रंथ आचार्य नन्दिकेश्वर द्वारा रचे गए हैं। परन्तु अभिनयदर्पण ग्रंथ पूर्ण नहीं है यह बात सर्वविदित ही है। जबकि दूसरी ओर भरतार्णव ग्रंथ अपने पूर्ण स्वरूप में प्राप्त होता है। अभिनयदर्पण में संयुत-असंयुत एवं अन्य हस्त प्रकारों की कुछ संख्या 93 है, जबकि दूसरी ओर भरतार्णव में हस्त प्रकारों की कुल संख्या 173 है। अभिनयदर्पण में अंगहारों का उल्लेख नहीं है जबकि भरतार्णव में 24 अंगहार प्राप्त होते हैं। भरतार्णव में अभिनयविशेषः नामक प्रकरण में 24 नृत्याभिनयों का उल्लेख इस ग्रंथ को विशिष्ट बना देता है।

अध्ययन के आधार पर निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है, कि आंगिक अभिनय के उक्त भेद तुलनात्मक रूप से अभिनयदर्पण की अपेक्षा कहीं अधिक विस्तृत और सघन है। दूसरी मुख्य बात यह भी है, कि इस ग्रंथ में दिया गया आंगिक अभिनय प्रकरण, नाट्यशास्त्र और अभिनयदर्पण दोनों से ही पृथक् और विशिष्ट जान पड़ता है, जिसके अध्ययन हेतु विस्तृत शोध की आवश्यकता है। उल्लेखनीय है, कि ग्रंथ के पन्द्रह में से चौदह अध्यायों (सप्तम तालाध्याय के अतिरिक्त) में नृत्य संबंधी तत्वों का विवेचन प्राप्त होता है।

उल्लेखनीय है, कि भारत में कथक, भरतनाट्यम्, ओडिशी आदि विभिन्न शास्त्रीय नृत्य हैं और ये सभी नृत्य किसी-न-किसी स्तर पर नाट्यशास्त्र व इस परम्परा के ग्रंथों से प्रभावित हैं तथा ये ग्रंथ भारतीय शास्त्रीय नृत्यों का आधार हैं। शास्त्रीय नृत्य में शोध की दृष्टि से प्रस्तावित ग्रंथ में अनेक संभावनाएँ दिखाई देती हैं। इसके अतिरिक्त भरतार्णव ग्रंथ में वर्णित आंगिक अभिनय का नाट्यशास्त्र, अभिनयदर्पण के साथ-साथ अशोकमल्ल द्वारा रचित 'नृत्याध्याय', संगीतरत्नाकर के 'नर्तनाध्याय', राणा कुम्भा द्वारा रचित 'नृत्यरत्नकोश' आदि से तुलनात्मक अध्ययन के परिणामस्वरूप निश्चित रूप से अतिमहत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त सकेगा, जिससे शास्त्रीय नृत्यों में प्रयोग की दृष्टि से नवीन संभावनाओं का सूत्रपात तो करेगा ही, साथ ही कलाकारों में भी नवीन ऊर्जा और प्रयोग की असीम सम्भावनाओं को भी जन्म देगा। विचारणीय तथ्य यह भी है, कि भरतार्णव ग्रंथ में प्रयोग के प्रत्येक पर सूक्ष्मता से दृष्टिपात किया गया है, उसके बाद भी यह ग्रंथ वर्तमान शोधार्थियों, विद्यार्थियों और अनेक विद्वत्जनों की दृष्टि में नहीं आ सका। अतः वर्तमान संदर्भ में भरतार्णव ग्रंथ में वर्णित आंगिक अभिनयों का अध्ययन किया जाना आवश्यक जान पड़ता है।

संदर्भ सूची :

- 1 द्विवेदी, डॉ. पारसनाथ, 'आचार्य नन्दिकेश्वर और उनका साहित्य', प्रकाशक – डॉ. हरीशचन्द्र मणि त्रिपाठी, वाराणसी, प्रथम संस्करण 1989, पृ. 26
- 2 Sastry, K. Sambasiva, Bruhaddeshi of Matangamuni, published by Govt. of His Highness The Maharani Regent of Travancore, 1928, p. 32
- 3 गैरोला, वाचस्पति, भारतीय नाट्य परम्परा और अभिनयदर्पण, संवर्तिका प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्क. 1967, पृ. 191-192
- 4 शास्त्री, बाबूलाल, भरतृमुनि कृत नाट्यशास्त्रम्, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, संस्करण वि.सं. 2040, अध्याय-3, श्लो. 31, पृ. 66
- 5 गैरोला, वाचस्पति, भरतार्णव, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, द्वितीय संस्क. 2013, भूमिका, पृ.5

